प्रकाशन : 2/2015

जैविक पशुपालन

सामान्य परिचय

प्रो. (डॉ.) बसन्त बैस
आचार्य एवं प्रमुख अन्वेषक
डॉ. विजय कुमार
सहायक आचार्य

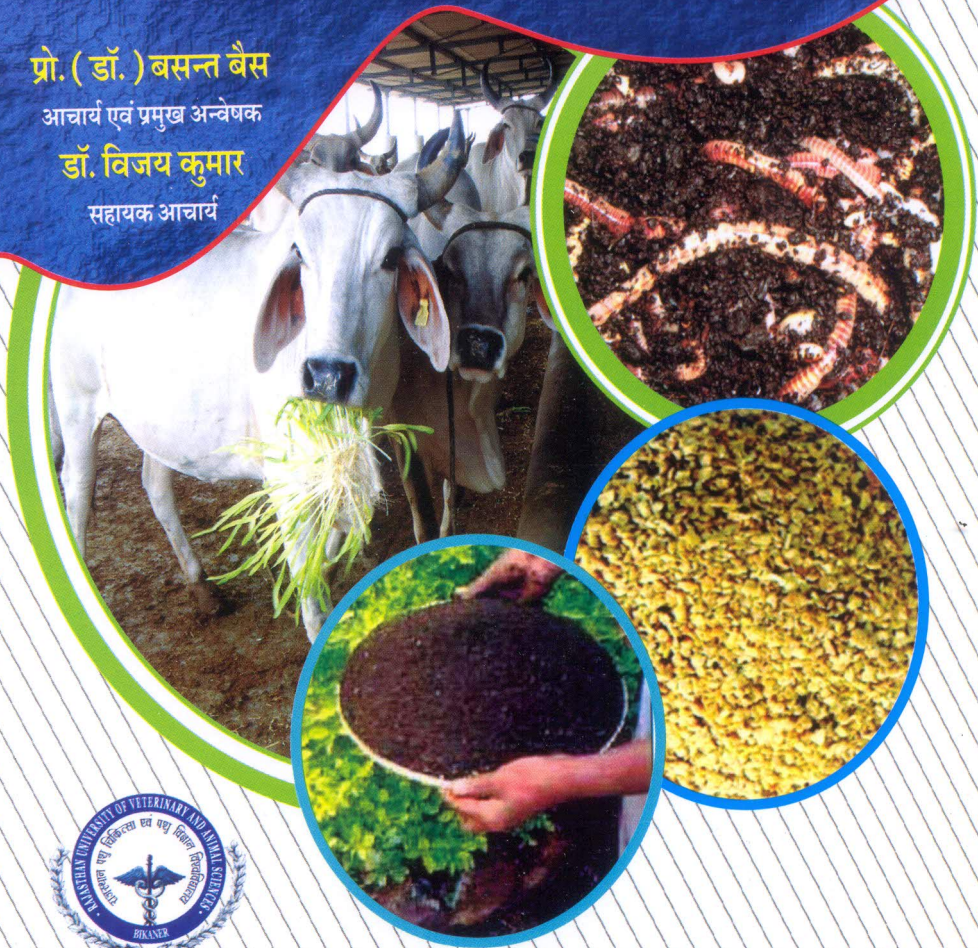

।। पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम् ।।

जैविक पशुधन उत्पाद तकनीक केन्द्र

राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

कृषि उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए हरित क्रांति की शुरूआत हुई इससे कृषि उत्पादन बढ़ा तथा हम आत्मनिर्भर भी हुए परन्तु इस उत्पादन को बढ़ाने के लिए अंधाधुंध संश्लेषित रासायनिक खादों, कीटनाशकों, पीड़कनाशकों, खरपतवार नाशिकों का उपयोग भी बढ़ा जिनके अवशेष वातावरण एवं खाद्य पदार्थों में फैलने लगे जिससे वातावरण प्रदूषण बढ़ा व इनका मनुष्यों व अन्य प्राणियों व प्रकृति पर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ा। मनुष्यों व अन्य प्राणियों में कई घातक बीमारियों जैसे की कैंसर, एलर्जी, चर्म रोग, कैंसर, सनायु तंत्र तथा पाचन सम्बन्धी बीमारियों को बढ़ावा मिला साथ ही प्रकृति में जैविक विविधता तथा पारिस्थितिकी तंत्र के स्थायित्व में भी कमी आई। इन बीमारियों से बचने तथा मनुष्य सहित अन्य प्राणियों को स्वस्थ रखने के लिए उत्पादन को बढ़ाने के साथ–साथ खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए समय की मांग के अनुसार जैविक पशुधन उत्पादन को बढ़ाने की आवश्यकता महसूस हुई।

जैविक पशुपालन कृषि से अंर्तसम्बंधित, पारिस्थितिकी मैत्रिक एक ऐसा प्रबंधन है जिसमें पशुओं को जो भी चारा व दाना खिलाये जाये वो सभी जैविक होना चाहिए तथा ये उत्पाद किसी भी संश्लेषित रासायनिक पदार्थ जैसे कि कीटनाशी, पीड़कनाशी, खरपतवारनाशी, भारी धातु तत्वों व सभी प्रकार की रासायनिक खादों जैसे यूरिया, डाई अमोनियम सल्फेट, सिंगल सुपर फॉस्फेट आदि से पूर्णतः मुक्त होने चाहिए।

जैविक पशुपालन उद्धेश्यः-

1. पर्याप्त मात्रा में अधिक गुणवता पूर्ण भोज्य पदार्थों का उत्पादन करना।
2. भूमि की उर्वरकता को लम्बे समय के लिए बनाये रखना।
3. पशुधन, कृषि व वातावरण में प्राकृतिक चक्र बनाना तथा पारिस्थितिकीय तंत्र को प्रदूषण से बचाकर मजबूत करना।

4. कृषि व जैविक विविधता का संरक्षण व अन्य जीवों तथा उनके आवासों को बचाना।
5. जीन विविधता का संरक्षण करना।
6. जल व जीवन के संरक्षण को प्रोत्साहित करना।
7. पुर्ननवीनीकरण पदार्थों के अधिकतम उपयोग को बढ़ाकर वातावरण को प्रदूषण से बचाना।
8. फसल उत्पादन व पशुपालन में संतुलन स्थापित करना।

9. पशुओं को उनका प्राकृतिक स्वभाव प्रकट करने देना।
10. जैविक अपघट्य व पुनः चक्रिक पदार्थों के उपयोग को बढ़ाना।
11. जैविक पशुपालन के द्वारा मनुष्यों व अन्य प्राणियों को स्वस्थ रखना।
12. जैविक पशुपालन द्वारा पशुपालकों को अधिक से अधिक लाभ पहुंचाना।

जैविक पशुपालन के फायदें

1. यह वातावरण में प्रदूषण के स्तर को कम करके इसको स्वास्थ्यवर्धक बनाता है।
2. यह मनुष्य व अन्य प्राणियों में, कृषि व चारा उत्पादन में उपयोग होने वाले संश्लेषित रासायनिक पदार्थों के अवशेषों को जाने से रोकता है जिससे इनसे होने वाली कई घातक बीमारियों से बचा जा सकता है।
3. स्थायी कृषि व पशुपालन को बढ़ावा देता है।

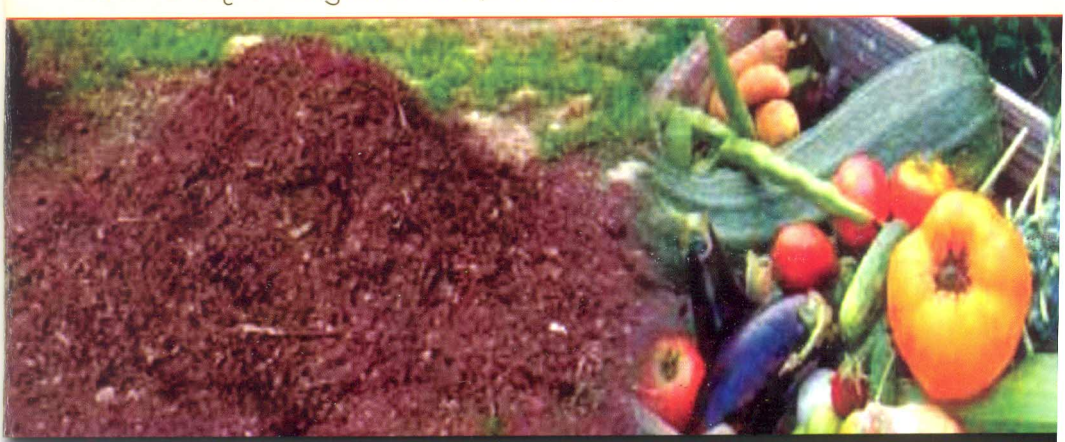

4. यह मृदा का स्वास्थ्यवर्धन स्थायी रूप से करता है।
5. कम लागत से अधिक मात्रा में व अधिक गुणवत्ता पूर्ण भोज्य पदार्थों का उत्पादन होता है।
6. यह प्राकृतिक संसाधनों के उपयुक्त उपयोग को सुनिश्चित करता है जिससे इन्हें लम्बे समय तक संरक्षित किया जा सके।
7. यह पशुओं व अन्य मशीनों के लिए ऊर्जा बचत करता है साथ ही कृषि के असफल होने की संभावनाओं को भी कम करता है।

8. जैविक खाद्य पदार्थों का बाजार मूल्य, सामान्य खाद्य पदार्थों से कई गुना अधिक होता है इस कारण किसान व पशुपालकों को अधिक लाभ की प्राप्ति होगी और उनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी।

जैविक पशुपालन : क्या करें ?

1. जैविक पशुधन फार्म को सामान्य, पशुधन फार्मों से बिल्कुल अलग रखें, अन्य पशुओं को इसमें न आने दे तथा इसका प्रमाणीकरण अधिकृत जैविक प्रमाणीकृत एजेंसी से करवाएं।
2. जमीन की उर्वरकता को बढ़ाने के लिए पूर्णतः जैविक खाद जैसे की वर्मीकम्पोस्ट, जैविक उपघटक पदार्थों तथा फार्म में बचे हुए अनुपयोगी पदार्थों का उपयोग करें।
3. पशुओं को पूर्णतः जैविक चारा खिलाएँ तथा चारे के उत्पादन के लिए प्रमाणित जैविक बीजों का ही उपयोग करे।
4. कीटों व पीड़कों का नियंत्रण जैविक व भौतिक विधियों से करे।
5. पशुओं को प्राकृतिक चारागाहों में चक्रिक क्रम में अधिक से अधिक चरायें।
6. पशुओं का प्रबंधन अच्छी तरह से करे ताकि वे बीमार नहीं पड़े, बीमार होने पर जहाँ तक संभव हो आयुर्वेदिक व होम्योपैथिक दवाओं का उपयोग करें।
7. इन पशुओं से प्राप्त उत्पादों को अन्य पशु उत्पादों से बिलकुल अलग रखे तथा इनकी प्रोसेसिंग जैविक तरीके से करें।
8. इन पशु उत्पादों में कोई भी संश्लेषित फीड एडिटिवस या रासायनिक संरक्षक न मिलाएं।
9. जैविक पशुधन उत्पादों की पैकेजिंग भी जैविक तरीके से करें।
10. जैविक पशुधन उत्पादों को प्रमाणीकृत एजेंसी से प्रमाणित करवाकर उन पर जैविक पशुधन उत्पाद होने का मार्का लगाकर ही बेचें जिससे पशुपालक को अधिक लाभ मिलेगा।

जैविक पशुपालन : क्या नहीं करें ?

1. चारा उत्पादन के लिए जेनेटिकली मॉडिफाइड बीजों का उपयोग न करें।
2. मृदा की उर्वरकता को बढ़ाने के लिए संश्लेषित रासायनिक खादों का उपयोग न करें।

3. कीटों व पीड़कों के नियंत्रण के लिए संश्लेषित कीटनाशकों व पीड़कनाशकों का उपयोग न करें।
4. खरपतवार को नष्ट करने के लिए संश्लेषित खरपतवारनाशी का उपयोग न करें।
5. पशुओं में जहां तक संभव हो एलोपैथिक दवाईयों का इस्तेमाल न करें।
6. जेनेटिकली मॉडिफाइड वैक्सीन का इस्तेमाल न करें।

-: तकनीकी मार्गदर्शन हेतु आभार :-

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत
कुलपति
राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

प्रो. बी. के. बेनीवाल
अधिष्ठाता
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर

-:: सम्पर्क सूत्र ::-

प्रो. बसंत बैस
डॉ. विजय कुमार
9828122277
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय
राजूवास, बीकानेर

Under COAPT SP (29) Project
Centre for Organic Animal Product Technology

मुद्रक : डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, बीकानेर # 9784105819